

DR. TSERING NORBOO

Dr.Tsering Norboo is the founder and honorary Secretary of Ladakh Institute of Prevention (LIP), a health related NGO, undergoing studies and creating awareness about occupational health, environmental health, life style related diseases and high altitude medicine. He is widely recognized across the world for his scientific contribution in high altitude medicine and for his path breaking study in identifying silicosis and mixed dust pneumoconiosis in an open non-industrial environment in the Himalayas, lung conditions resulting from inhalation of carbon particles from domestic fire pollution and environmental dust containing respirable silicon dioxide particles.

2. Born on April16, 1944, Dr. Norboo did his medical graduation (MBBS) in 1967 and MD (General Medicine) in 1980 from Jammu and Kashmir University. Before joining as Physician in 150 bedded SNM Hospital in Leh in 1980, he served as Medical Officer in remote areas of Nyoma (Altitude 14,000ft) in Ladakh for four years.

3. At SNM Hospital Leh, Dr. Norboo and his colleagues conducted well designed studies to understand the reasons for highly prevalent diseases like poor respiratory health (COPD, Tuberculosis, Silicosis, Lung Cancer), gall stone, cancer of the stomach, chronic rheumatic heart diseases, and coronary heart disease in the native population. The results were published in reputed journals like "Thorax" "International Journal of Epidemiology", "British Journal of Industrial Medicine", "Indian Journal of Gastroenterology" and "European Journal of Gastroenterology". These works led to establishment of facilities like Echocardiography, Upper GI Endoscopy, Colonoscopy and Ultrasonography in SNM Hospital Leh, unknown for many of the district hospitals across the country.

4. Following his retirement from Government services in 2002, Dr. Norboo founded Ladakh Institute of Prevention (LIP), where his work on "Non-communicable diseases" enabled him to screen Ladakhi population for chronic disease and create awareness amongst the population about healthy life style and to avoid the risk factors. The results on hypertension and diabetes were published in "BMJ Open" in 2015. Currently his work on "mother and child health hand book" applied practically till date on 3800 mother and child in Ladakh is in accord with the WHO recommendation of family based document on mother and child health of 2018 . This single tool for mother and child health is poised to produce invaluable input for health planners besides ensuring good pregnancy outcome and better growth and development of child.

5. Dr.Norboo has been associated with activities related to studies of Defence Institute of Physiology and Allied Sciences, DRDO, Ministry of Defence. He has presented papers related to high altitude medicine in the country and abroad and reviewed papers for journals concerned with high altitude work.

6. In recognition of his lifelong contribution to health of the Ladakhi population; Ladakh Autonomous Hill Development Council conferred on him the award of "Ladakh dPal-Nams", the pride of Ladakh, in October 2018, the third of its kind related to history and culture of Ladakh.

पद्म श्री

डॉ. छेरिंग नोरबू



डॉ. छेरिंग नोरबू लद्दाख निवारण संस्थान (एलआईपी) के संस्थापक एवं मानद सचिव हैं, जो स्वास्थ्य से जुड़ा एक गैर-सरकारी संगठन है और जो व्यवसायगत स्वास्थ्य, पर्यावरणीय स्वास्थ्य, जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों तथा अधिक ऊंचाई वाले स्थानों की औषधीय चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन करता है और इनके बारे में जागरूकता का प्रसार करता है। आपको विश्व-भर में व्यापक रूप से हिमालय के अधिक ऊंचाई वाले स्थानों में औषधीय चिकित्सा में आपके वैज्ञानिक योगदान और खुले गैर-औद्योगिक पर्यावरण में सिलिकोसिस तथा मिक्स्ड डस्ट न्यूमोकोनिओसिस, घरेलू अग्नि प्रदूषण से उत्पन्न कार्बन-कणों तथा श्वसनीय सिलिकॉन डाईआक्साइड कणों से युक्त पर्यावरणीय धूल में सांस लेने के कारण पैदा हुई फेफड़े की दशाओं की पहचान करने में युगांतरकारी अध्ययन के लिए जाना जाता है।

2. आपका जन्म 16 अप्रैल, 1944 को हुआ था। आपने जम्मू एवं कश्मीर विश्वविद्यालय से वर्ष 1967 में चिकित्सा-विज्ञान में स्नातक (एमबीबीएस) और वर्ष 1980 में एम डी (जनरल मेडिसिन) की पढ़ाई पूरी की। वर्ष 1980 में, लेह स्थित 150 बिस्तर वाले एस एन एम अस्पताल में फिजीशियन के पद पर कार्य ग्रहण करने के पूर्व आपने चार वर्षों तक लद्दाख में न्योमा (14000 फीट की ऊंचाई) के सुदूर क्षेत्रों में चिकित्सा अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दीं।

3. लेह स्थित एसएनएम अस्पताल में आपने और आपके सहकर्मियों ने वहां के मूल निवासियों जन्मजात आबादी में अत्यधिक प्रचलित बीमारियों जैसे-कमजोर अंत:श्वसनीय स्वास्थ्य (सीओपीडी, क्षयरोग, सिलिकोसिस, फेफड़े का कैंसर), पित्त की पथरी, पेट का कैंसर, क्रॉनिक रियूमेटिक हृदय की बीमारी तथा कोरोनरी हृदय की बीमारी के कारणों को समझने के लिए एक सुव्यवस्थिति अध्ययन संचालित किया। इसके परिणाम ख्यातिलब्ध पत्रिकाओं जैसे "थोरैक्स", "इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एपिडिमियोलोजी", "ब्रिटिश जर्नल ऑफ इंडस्ट्रियल मेडिसिन" "इंडियन जर्नल ऑफ गैस्ट्रोएन्टेरोलॉजी" तथा "यूरोपियन जर्नल ऑफ गेस्ट्रोएन्टेरोलोजी", में प्रकाशित हुए। इन कार्यों के फलस्वरूप एसएनएम अस्पताल लेह, जिसके बारे में देश के अनेक जिला अस्पताल अनभिज्ञ हैं, में इकोकार्डियोग्राफी, अपर जी आई एन्डोस्कोपी, कोलोनोस्कोपी तथा अल्ट्रासोनोग्राफी जैसी सुविधाओं की बुनियाद डाली गई।

4. वर्ष 2002 में सरकारी सेवाओं से सेवानिवृत्त होने के उपरांत आपने लद्दाख इंस्टीटयूट ऑफ प्रीवेंशन (एलआईपी) की स्थापना की जहां "गैर-संचारी बीमारियों" पर किए गए आपके कार्य ने लद्दाख के लोगों में क्रोनिक बीमारी की जांच करने और स्वास्थ्यकर जीवनशैली जीने तथा जोखिम घटकों से बचाव के बारे में आबादी के बीच जागरूकता पैदा करने में आपको सक्षम बनाया। उच्च रक्तचाप तथा मधुमेह संबंधी निष्कर्षों को वर्ष 2015 में "बीएमजे ओपन" में प्रकाशित किया गया। वर्तमान में लद्दाख में 3800 माताओं और शिशुओं पर आज तक व्यावहारिक रूप से लागू "मदर एंड चाइल्ड हेल्थ हैंड बुक" के संबंध में किया गया आपका कार्य, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ) के साथ किए गए समझौते में वर्ष 2018 के मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य से संबंधित परिवार आधारित दस्तावेज की सिफारिश में शामिल है। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए यह एकल साधन, अच्छे गर्भावस्था के परिणाम और शिशु की बेहतर वृद्धि एवं विकास सुनिश्चित करने के अतिरिक्त स्वास्थ्य योजनाकारों के लिए अमूल्य जानकारी प्रस्तुत करने हेतु एक उपकरण है।

5. आप डिफेंस इन्स्टीट्यूट ऑफ फिजियोलोजी एंड अलाइड साइंसेज, डीआरडीओ, रक्षा मंत्रालय के अध्ययनों से जुड़ी गतिविधियों से संबद्ध रहे हैं। आपने देश और विदेश में उच्च तुंगतावाले स्थानों में चिकित्सा विज्ञान से जुड़े पत्रादि प्रस्तुत किए और अधिक ऊंचाई संबंधी कार्य से जुड़ी पत्रिकाओं में शामिल किए जाने वाले पत्रों की समीक्षा की।

6. लद्दाखी लोगों के स्वास्थ्य के प्रति किए गए आपके आजीवन योगदान के मान्यतास्वरूप, लद्दाख ऑटोनोमस हिल डेवलेपमेंट काउंसिल ने आपको अक्तूबर 2018 में लद्दाख का गौरव" लद्दाख द पाल-नैम्स" के पुरस्कार से सम्मानित किया जो लद्दाख के इतिहास और संस्कृति से जुड़ा अपनी तरह तीसरा पुरस्कार है।